



॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली- 110007, आई. एफ. एस. कोड SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें।

—अनिल आर्य

वर्ष-43 अंक-08 आश्विन-2083 दयानन्दाब्द 202 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.09.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 48वें स्थापना दिवस के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी समारोह सम्पन्न

हम ओर आप ही भारत ओर दुनियां को बदलेंगे —डॉ. अशोक कुमार चौहान
स्वामी श्रद्धानन्द जी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाये —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य



डॉ अशोक कुमार चौहान दीप प्रज्वलित करते हुए साथ में आनन्द चौहान, आचार्य अखिलेश्वर जी व अनिल आर्य। मंच पर बाएं से अजित चौहान, आर्य रविदेव गुप्त, आनंद चौहान, अशोक कुमार चौहान, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र आचार्य अखिलेश्वर, ओम सपरा विनोद बंसल आचार्य गवेन्द्र शास्त्री।



ओम सपरा द्वारा लिखित ट्रैक्ट का विमोचन करते अतिथिगण। द्वितीय चित्र में खचाखच भरे सभागार का सुंदर दृश्य

नई दिल्ली, रविवार 6 सितम्बर 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 48वें स्थापना दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली में किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान ने की। उन्होंने अपार जनसमूह को देखते हुए कहा कि आप लोगों को देखकर जो ऊर्जा आनन्द की प्राप्ति होती है। वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। वे आत्म विश्वास के साथ उद्घोषणा करते हैं कि भारत विश्व गुरु बनें। हम ओर आप ही भारत ओर दुनियां को बदलेंगे। जो लोग गुरुकुल से पढ़ कर निकलते हैं वह कुछ भी कर सकते हैं। आर्य समाज की विचार धारा का आज कोई तोड़ नहीं जिसे प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है। अगर आप भगवान के लिए कार्य करोगे तो वह आपका ध्यान रखेगा। भगवान को हमारी जरूरत है क्योंकि दिन रात उसी के लिए कार्य कर रहे हैं। बच्चों को अच्छे संस्कार देना हमारी सबसे बड़ी कमाई है। विशिष्ट अतिथि आनंद चौहान (निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि महर्षि दयानन्द का समाज सुधार अविस्मरणीय रहेगा। आर्य समाज के लोग विश्व को बदलेंगे और स्वामी दयानन्द के विचारों को ज़न ज़न तक पहुंचाएंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य वीरेंद्र विक्रम ने यज्ञ के साथ किया। अजीत चौहान ने कहा कि आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिए युवा की आवश्यकता है, युवाओं के हुजूम को देख प्रसन्नता है। वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर, गवेन्द्र शास्त्री, विनोद बंसल, श्रुति सेतिया, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, रवि देव गुप्त ने भी ओजस्वी विचार रखे। ध्वजारोहण आर्य नेता राजेन्द्र वर्मा ने किया। पिंकी आर्या, प्रवीण आर्य, काशी राम आर्य के मधुर भजन हुए। कार्यक्रम का कुशल संचालन कर रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने केंद्र सरकार से मांग की स्वामी श्रद्धानन्द जी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी महान समाज सुधारक थे उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में उल्लेखनीय योगदान दिया। वह एक निर्भीक सन्यासी थे उन्होंने सदा ही सत्य का पालन किया। साथ ही कहा कि आर्य युवक परिषद् युवा पीढ़ी को सुसंस्कार देने का काम जारी रखेगी। राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई व आर्य नेता अरुण बहल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। व्यायाम शिक्षक गौरव सिंह के निर्देशन में आर्य युवकों का व्यायाम प्रदर्शन आकर्षण का केंद्र रहे। प्रमुख रूप से ज्ञानेन्द्र सिंह, देवेन्द्र आर्य, ओमेन्द्र आर्य (आर्य बंधु), यशोवीर आर्य, ओम सपरा, अनुपम आर्य (हापुड़), डा प्रमोद सक्सेना, अरुण आर्य, कपिल बब्बर (जम्मू), वीरेंद्र योगाचार्य (फरीदाबाद), राम कुमार आर्य, श्रीकृष्ण दहिया (जींद), रविदेव गुप्ता, राजेश मेहंदीरता, धर्म पाल आर्य, दुर्गेश आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, सुधीर कुमार बंसल, देवेन्द्र भगत, सुभाष शर्मा आदि उपस्थित थे। समारोह में जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया।

ईश आर्य हिसार व श्रुति सेतिया का अभिनंदन



परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ईश आर्य व विदुषी श्रुति सेतिया के अभिनंदन का सुन्दर दृश्य

रामानन्द आर्य व राजेन्द्र वर्मा का अभिनंदन



आर्य समाज खजूरी के मंत्री रामानन्द आर्य व आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट 1 नई दिल्ली के प्रधान राजेन्द्र वर्मा के अभिनंदन का दृश्य।

योगेश मुंजाल व राम चन्द कपूर का अभिनंदन



आर्य समाज सेवी योगेश मुंजाल व आर्य समाज कालका जी के संरक्षक राम चन्द कपूर के अभिनंदन का दृश्य

स्वदेश शर्मा व कपिल बब्बर का अभिनंदन



आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव के मंत्री स्वदेश शर्मा व आर्य समाज जानीपुर जम्मू के उपप्रधान कपिल बब्बर के अभिनंदन का दृश्य।

ज्ञानेन्द्र सिंह व अनुपम आर्य का अभिनंदन



आर्य नेता ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य गाजियाबाद एवं हापुड़ से अनुपम आर्य के अभिनंदन का दृश्य।

वीरेन्द्र योगाचार्य व आर्य रविदेव गुप्त का अभिनंदन



परिषद् के हरियाणा प्रान्तीय महामंत्री वीरेन्द्र योगाचार्य व दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान आर्य रविदेव गुप्ता।

आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र व अरुण आर्य का अभिनंदन



वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र व दिल्ली के प्रदेश महामंत्री अरुण आर्य के अभिनंदन का दृश्य।

रोहित सिंह आर्य व जितेन्द्र सिंह आर्य का अभिनंदन



सर्वश्रेष्ठ शिक्षक रोहित सिंह आर्य व जितेंद्र सिंह आर्य फरीदाबाद के अभिनंदन का दृश्य।

वीरेन्द्र अहलूवालिया व श्री कृष्ण दहिया का अभिनंदन



आर्य समाज विकास पुरी के उपप्रधान वीरेन्द्र अहलूवालिया व जीन्द शाखा के अध्यक्ष श्री कृष्ण दहिया के अभिनंदन का दृश्य।

सत्य नारायण बंसल का अभिनंदन



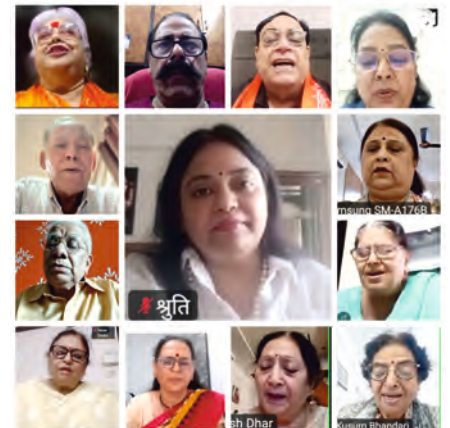
नया बाजार स्थित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को किराएदारों और अवैध कब्जा करने वालों से मुक्ति दिलाने के लिए आर्य समाज की युवा संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने 23 दिसम्बर को प्रातः श्रद्धानन्द चौक टाउन हाल चांदनी चौक पर विशाल धरने का आयोजन किया है। अध्यक्ष अनिल आर्य ने बताया कि नया बाजार में अवैध कब्जों की भरमार है। अवैध कब्जों का यह हाल है कि आप श्रद्धालु मुख्य गेट से निकल भी नहीं पाता है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 802वां वेबिनार सम्पन्न

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

श्रीकृष्ण का चरित्र अत्युत्तम था —श्रुति सेतिया

सोमवार 7 सितम्बर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द की दृष्टि में योगीराज श्रीकृष्ण विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 802 वाँ वेबिनार था। योगाचार्या एवं प्राकृतिक चिकित्सक श्रुति सेतिया ने श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व और नीतिज्ञता पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि श्रीकृष्ण को केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि ज्ञान, नीति, कर्तव्य, दूरदर्शिता और श्रेष्ठ कर्म के प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में भी देखना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण के गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र को अत्युत्तम बताया है तथा उन्हें आप्त पुरुषों के समान माना है। श्रीकृष्ण का जीवन सिखाता है कि ज्ञान का वास्तविक महत्व तभी है, जब वह सही समय पर सही निर्णय लेने, विवेक बनाए रखने और कर्तव्य निभाने में सहायक हो। उन्होंने युवाओं को आह्वान किया गया कि वे श्रीकृष्ण को केवल पूजा तक सीमित न रखें, बल्कि उनके ज्ञान, साहस, नीति और कर्तव्यबोध को अपने जीवन में अपनाएँ। महापुरुषों के श्रेष्ठ गुणों को अपने आचरण में उतारना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री रजनी गर्ग एवं अध्यक्ष राजश्री यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका पिकी आर्या, कौशल्या अरोड़ा जनक अरोड़ा प्रतिभा कटारिया, संतोष धर, रविन्द्र गुप्ता आदि के मधुर भजन हुए।



जातिवाद को मिटाने के हमारे पूर्वजों का एक विस्मृत प्रयास

—डॉ. विवेक—आर्य

1926 में पंजाब में आद धर्म के नाम से अछूत समाज में एक मुहिम चली। इसे चलाने वाले मंगू राम, स्वामी शूद्रानन्द आदि थे। ये सभी दलित समाज से थे। स्वामी शूद्रानन्द का पूर्व नाम शिव चरन था। उनके पिता ने फगवाड़ा से जालंधर आकर जूते बनाने का कारखाना लगाया था। उन्होंने आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य हाई स्कूल में 1914 तक शिक्षा प्राप्त की थी। बाद में आर्यसमाज से अलग हो गये। इनका उद्देश्य दलित समाज को यह सन्देश देना था कि वो हिन्दू धर्म त्याग कर चाहे सिख बने, चाहे मुसलमान और चाहे ईसाई। पर हिन्दू न रहे। सत्य यह है जातिवाद एक अभिशाप है जिसका समाधान धर्म परिवर्तन से नहीं होता। उस काल में संयुक्त पंजाब के दलित स्यालकोट, गुरुदासपुर में ईसाई या सिख बन गये और रावलपिंडी, लाहौर और मुलतान में मुसलमान बन गए। पर इससे जातिवाद की समस्या का समाधान नहीं निकलता था। सिख बनने पर उसे मज़हबी कहा जाने लगा, ईसाई बनने पर मसीही और मुसलमान बनने पर मुसली। अपने आपको उच्च मानने वाले गैर हिन्दू अभी भी उसके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध नहीं रखते थे। सिखों के हिन्दू समाज का पंथ के रूप में सम्मान था पर जो दलित हिन्दू जैसे रहतियें, रविदासिए, रामगडिये आदि थे उनके साथ उच्च समझने वाले सिखों का व्यवहार भी छुआछूत के समान था। आर्यसमाज ने ऐसी विकट परिस्थिति में अछूतों का कार्य प्रारम्भ किया। अछूतों के लिए आर्यों ने सार्वजनिक कुएँ खोले तो उनके बच्चों को पढ़ाने के लिए पाठशालाएँ और शिल्प केंद्र। पंडित अमीचंद शर्मा ब्राह्मण परिवार में जन्में थे। आपके ऊपर अछूतों का प्रेरणा ऐसी हुई कि आपने वाल्मीकि समाज में कार्य करना प्रारम्भ किया। आपने वाल्मीकि प्रकाश के नाम से पुस्तक भी लिखी थीं। इस पुस्तक में वाल्मीकि समाज को उनके प्राचीन गौरव के विषय में परिचित करवाया गया था।

आद धर्म सामाजिक सुधार से अधिक राजनीतिक महत्वाकांक्षा की ओर केंद्रित गया। 1931 की जनगणना में आद धर्म को जनगणना में हिन्दुओं से अलग लिखवाने की कवायद चलाई गई। इसके लिए अछूत समाज में जनसभायें आयोजित की जाने लगी। आर्यों ने इस स्थिति को भांप लिया। उन्हें कई दशक से अछूतों और विधर्मी बन गए अछूतों को वापिस शुद्ध कर सहधर्मी बनाने का अनुभव था। ऐसी ही एक जनसभा में शूद्रानन्द भावनाओं को भड़काने का कार्य कर रहा था। वो कहता था कि मुसलमान बन जाओ पर हिन्दू न रहो। आर्यों को उनकी सुचना मिली। आर्यसमाज के दीवाने पंडित केदारनाथ दीक्षित (स्वामी विद्यानन्द के पिता) और ठाकुर अमर सिंह जी (महात्मा अमर स्वामी) उस सभा में जा पहुंचे। कुछ देर सभा को देखकर दोनों खड़े हो गये। फिर ऊँची आवाज़ में बोले— शैं बिजनौर का रहने वाला जन्म का ब्राह्मण हूँ और ये अरनिया जिला बुलंदशहर के रहने वाले राजपुर क्षत्रिय हूँ। स्वामी शूद्रानन्द कहते हैं कि हम तुम से घृणा करते हैं। तुम लोगों में से कोई दो गिलास पानी ले आये। पानी आ गया। एक गिलास पंडित जी ने पिया हुए एक अमर सिंह जी ने। दो मिनट में शूद्रानन्द का बना बनाया खेल बिगड़ गया। और हजारों लोग मुसलमान बनने से बच गये। पंडित केदारनाथ स्वामी दर्शनानन्द के उपदेशों को सुनकर आर्य बने थे। उस काल में जब अछूत के घर का कोई पानी पीना तक पाप मानता था, तब आर्यों के उपदेशकों ने जमीनी स्तर कर अछूतों का कार्य किया था। उनका लक्ष्य राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करना नहीं था अपितु मानव मात्र के साथ बंधु और सखा के समान व्यवहार करना था। आजकल के दलितों का नाम से दुकान चलाने वाले क्या शूद्रानन्द के राह पर नहीं चल रहे।

अजीत चौहान एमेटी ग्रुप का अभिनंदन



शोक सन्देश



श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी की पूज्य माता जी एवं डॉ रूपकिशोर शास्त्री जी (पूर्व कुलपति कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) की मौसी श्रीमती सुनहरी देवी जी का दिनांक 25/08/2026 को देहावसान हो गया है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि पवित्र दिवंगत आत्मा को शांति सद्गति प्रदान करे।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम